www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्व एवं त्यौहार देव-संस्कृति की अनमोल धरोहर

---श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्व एवं त्यौहार देव-संस्कृति की अनमोल धरोहर

★★

यह विश्व-प्रकृति, जिससे मानव तथा अन्य समस्त प्राणियों और भौतिक पदार्थों की उत्पत्ति हुई है, एक विशेष नियम से बंधी है। उस नियम के अनुसार ही मानव-प्रकृति का भी विकास हुआ है। इस व्यापक नियम के नियन्त्रण में ही हम को दिखलाई पड़ने वाले इस जड़-चेतन संसार के सब कार्य चल रहे हैं। इन्हीं नयमों को, जिनके आधार पर यह विश्व-संसार टिका हुआ है, जान लेना और उनके अनुकूल व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की व्यवस्था करना यही भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सार है। यहाँ के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने समाज और व्यक्तियों के लिए जो आचरण और कर्तव्य नियत किये हैं, उन सब में इसी गहन तत्व को दृष्टिगोचर रखा गया है। वे जानते थे कि मनुष्य का समस्त जीवन इन्हीं नियमों की एक शृङ्खला के रूप में है, इसलिए उसका कोई भी कार्य इनके विपरीत नहीं होना चाहिए अन्यथा प्रकृति उसे अवश्य दण्ड देगी। इसलिए उन्होंने हमारे छोटे-बड़े सभी कर्तव्यों और प्रातः काल से लेकर शयनकाल तक दैनिक कृत्यों को धर्म का रूप दे दिया, जिन पर आचरण करके ही हम सुख और शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

जिस प्रकार हिन्दू शास्त्रों में हमारे व्यक्तिगत कृत्यों को धर्म का रूप दिया गया है, उसी प्रकार सामाजिक कार्यों को भी धर्म का अङ्ग बना दिया गया है, जिससे लोग उनके पालन में ढिलाई न करें और उनसे यथोचित प्रेरणा प्राप्त करते रहें। त्यौहार, धार्मिक और सामाजिक उत्सव तथा व्रत आदि का विधान वैसे संसार की सभी जातियों और देशों में पाया जाता है। सभी मजहबों के संस्थापकों और आचार्यों ने कुछ ऐसे विशेष दिन नियत कर दिये हैं, जिन पर वे अपने विशेष मनोभावों को प्रकट करने के लिए कुछ विशेष कृत्य करते देखे जाते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार मनुष्य सदा एक ही रस में रहना पसन्द नहीं करता। अगर वह वर्ष के ३६५ दिन नित्य प्रति के कार्यों और नियमित व्यवसाय या नौकरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदि में ही लगा रहे तो उसके चित्त में अवश्य उद्विग्नता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि उसको बीच-बीच में कभी ऐसा अवसर मिलता रहे जिससे वह अपने जीवन में कुछ नवीनता तथा आमोद-प्रमोद का अनुभव कर सके और विश्राम भी पा सके।

अन्य समस्त जातियों के त्यौहारों की भाँति उपर्युक्त उद्देश्य हिन्दू-जाति के त्यौहारों में भी पाये जाते हैं। पर हमारे यहाँ इतनी विशेषता और है कि त्यौहारों को केवल छुट्टी का अथवा धर्माचार्यों की जयन्ती आदि का दिन ही न समझकर उससे मनुष्यों की आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक विकास का भी उद्देश्य सिद्ध किया है। सच पूछा जाय तो हिन्दू-जाति अपनी प्राचीन सभ्यता और आचार-विचार को इतनी शताब्दियों के परिवर्तन के बाद भी जो अभी तक कायम रख सकी है, इसका बहुत कुछ श्रेय इन त्यौहारों और उत्सवों को ही है। साधारण जनता धर्म के गम्भीर उपदेशों को नहीं समझ सकती और न आध्यात्मिक तत्वों पर अमल कर सकती है। उसको शिक्षा देने और सुमार्ग पर चलाने का एक मात्र मार्ग धार्मिक कथा-कहानी श्रवण कराना और मनोरंजन के साथ धार्मिक कृत्यों के करने की विधि बतलाना ही है। यह उद्देश्य त्यौहारों और व्रतोत्सव आदि से ही सुगमतापूर्वक सिद्ध हो सकता है।

त्यौहारों की स्थापना मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर की गई है--

(१) जनता में जागृति, सद्भावना, ऐक्य, सङ्गठन की वृद्धि करना, लोगों को सुसंस्कृत, शिष्ट और सुयोग्य नागरिक बनाना, उनमें सच्ची सामाजिकता की भावना उत्पन्न करना।

(२) किसी विशेष अवसर पर बड़े यज्ञ के लिए। यद्यपि शास्त्रों के मतानुसार 'यज्ञ' शब्द का अर्थ परोपकार के कार्यों के लिए होता है तथापि वैदिक कालीन पर्वों और उत्सवों में यज्ञ का अर्थ बड़े हवन से ही लिया जाता है।

किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन या फसल के तैयार होने पर सामाजिक समारोह के रूप में।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(४) सर्वसाधारण के मनोरंजन और हृदयोल्लास के लिए।

(५) किसी युग-प्रवर्तक महापुरुष, अद्वितीय कर्मवीर, शूरवीर, प्रणवीर, दानवीर, महान विद्वान्, आदर्श प्रतापी की अथवा किसी महान् राष्ट्रीय घटना की स्मृति मनाने के निमित्त।

हमारे तत्ववेत्ता, पूज्यपाद ऋषि-महर्षियों के ऊपर बतलाये पाँचों उद्देश्यों के अनुकूल अनेक त्यौहार और पर्व के दिवस नियत कर दिये हैं और उन सब में लौकिक कार्यों के साथ ही धार्मिक तत्वों का ऐसा समावेश कर दिया है कि उनसे हमको अपने जीवन निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है और समाज भी सुमार्ग पर अग्रसर हो सकता है। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरणशील प्राणी है। दूसरों को कोई शुभ काम करता देखकर उसके मन में भी वैसा ही काम करने की इच्छा स्वतः उत्पन्न होती है। फिर यदि उस कार्य के करने वाले उसके कुटुम्बीजन अथवा पूर्वज हों तो उस कार्य में उसका अनुराग और भी बढ़ जाता है यही कारण है कि प्राचीनकाल में जिनके कुलों में उत्तम कार्य और सत्कर्म होते चले आये थे, उनकी सन्तान भी प्रायः सन्मार्गगामी होती थी। इसके विरुद्ध जिनके पूर्व पुरुष बहुत समय से जघन्य आचार वाले अथवा निन्दनीय वृत्ति वाले रहे हों, उनकी सन्तान का सुधार बड़ी कठिनता से होता था, क्योंकि बालक अधिकांश में अपने बड़ों से ही आचरण सीखते हैं और उसी ढांचे में ढलते हैं, जिसमें उनके पूर्व पुरुष ढले होते हैं।

जो बात एक व्यक्ति के सम्बन्ध में कही गई है, वही समाज के सम्बन्ध में भी सत्य है, क्योंकि समाज या जाति व्यक्तियों के समूह का ही नाम है। जिस समाज या जिस जाति में अधिक संख्या जैसे भले या बुरे, उन्नतिशील अथवा अवनतिशील लोगों की होगी, वैसी ही वह जाति बन जायेगी। इसीलिए सभ्य जातियाँ अपने महान् कार्य करने वाले पूर्व पुरुषों, महात्माओं, प्रतापवान् व्यक्तियों की स्मृति को सुरक्षित बनाये रखने के लिए प्राणपण से यत्न करती हैं, जिससे आगामी पीढ़ियों को उनका आदर्श प्रेरणा देता रहे। इस स्मृति को स्थिर रखने और ताजा बनाये रखने के दो उपाय हैं---

एक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना और उनका पठन-पाठन जिससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालकों और युवकों के हृदयों में अपने प्रातः स्मरणीय पुरुषों के कीर्ति-कलाप और उच्च आदर्श स्थान बना लेते हैं। दूसरी विधि—उन खास तिथियों को, जब उन महापुरुषों के जीवन की कोई महान घटना घटी हो अथवा जिस दिन उनका जन्म हुआ हो, उत्सव अथवा त्यौहार मनाना है। इनसे साधारण मनुष्यों को भी उन महापुरुषों के नाम लेने और उनके सम्बन्ध में कुछ चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे वे सत् शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, अपने जीवन को किसी उच्च लक्ष्य की तरफ मोड़ सकते हैं। ससार की सभी सभ्य जातियों में इस प्रकार के स्मारक-दिवस बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाये जाते हैं और किसी जाति की सभ्यता और उचता का अनुमान पूर्व पुरुषों के प्रति उसके सम्मान और वीर-पूजा से लगाया जाता है।

जिस जातिके पास ऐसे कोई महापुरुष नहीं हैं, वह बड़ा अभागीहै और उन्नति के मार्ग पर उसका अग्रसर होना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि जब उसके सामने कोई उच्च आदर्श ही नहीं तो किस प्रकार अवनति के गड्ढे से निकलकर उन्नति के शिखर की तरफ अग्रसर हो सकती है? इसलिए समाजशास्त्र-वेत्ताओं ने यहाँ तक कह दिया है कि जिस जाति के पास दुर्भाग्य से उच्च आदर्श के लायक कोई महापुरुष न हो उसे किसी अन्य जाति के महापुरुषों को अपना लेना चाहिए, क्योंकि बिना आदर्श के उत्कर्ष की सम्भावना बिना जड़मूल के पौधे के फलने-फूलने की आशा के समान हास्यास्पद है। कहा जाता है कि योरोप में फ्रांस देश इस विषय में अग्रगण्य है और पूर्व पुरुषों के जितने स्मारक तथा स्मृति-दिवस वहाँ पाये मनाये जाते हैं उतने और किसी देश में नहीं। जापान वाले तो अपना मुख्य धर्म ही पूर्वजों की पूजा करना मानते हैं और वहाँ जो ११ मुख्य त्यौहार प्रचलित हैं, उनमें से नौ पूर्व पुरुषों के स्मारक-दिवस ही हैं।

सौभाग्य से हमारा भारतवर्ष भी इस विषय में किसी अन्य जाति से पीछे नहीं हैं। एक प्रकार से तो हम कह सकते हैं कि हिन्दुओं के बराबर त्यौहार और पर्व दिवस संसार की किसी भी जाति में प्रचलित नहीं हैं। यदि यहाँ के सब त्यौहारों, पर्वो तथा व्रतोत्सव आदि की गणना की जाय तो उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संख्या इतनी अधिक है कि १ वर्ष के ३६५ दिनों में से एक भी दिन ऐसा नहीं मिल सकता, जो किसी न किसी दृष्टि से पवित्र पर्व और विशेष धार्मिक कृत्य से शून्य हो । इसी से कहावत प्रचलित हो गई हैं कि—"आठ वार और नौ त्यौहार ।"

वर्तमान काल में हिन्दू जाति में एक प्रकार की निर्जीवता आ गई है, वह ऋषि-मुनियों द्वारा निर्धारित जीवन प्रदायक प्रथाओं को भूलकर सारहीन रूढ़ियों के जाल में ग्रसित हो गई है । तदनुरूप ही हमारे त्यौहारों और पर्वों का रूप भी विकृत हो गया है । अब लोग उनके मूल स्वरूप को तो बहुत कुछ भूल गये हैं और उनके स्थान में उद्देश्यहीन बेढङ्गी रूढ़ियों को अपनाकर पुरानी लकीर पीटते जा रहे हैं । इतना ही नहीं, कितने ही त्यौहारों पर लाभ-दायक कृत्यों के बजाय लोग ऐसे काम करने लग गये हैं, जो स्पष्टत: हानिप्रद हैं । उदाहरण के लिए कुछ लोगों ने दिवाली को जुआ खेलने का ही त्यौहार बना डाला है और वे इस अवसर पर एक दिन नहीं, कई दिन तक भयंकर रूप से जुआ खेलते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि अनेक बार बड़ी दुर्घटनायें हो जाती हैं । इसी प्रकार होली पर जबर्दस्ती रंग और कीचड़ आदि फेंकने तथा गन्दी से गन्दी गाली बकने को ही त्यौहार का उद्देश्य समझ लिया जाता है । इसके कारण भी मार-पीट हो जाना और सिर फूटना साधारण बात हो गई है ।

यों तो समाज में आज ऐसे भी सज्जन मौजूद हैं जो पण्डित और ज्ञानी होने का दावा करते हुए तरह-तरह की दलीलें देकर इन सब कुरीतियों का समर्थन करते हैं, पर हम त्यौहारों के नाम पर या प्राचीन रूढ़ियों के बहाने किसी ऐसी बात को स्वीकार नहीं कर सकते जिनसे व्यक्तियों और समाज को हानि उठानी पड़े । अधिकाँश मनुष्यों की प्रकृति प्राय: अधोगामिनी होती है और उसे जरा भी सहारा या बहाना मिल जाय तो फौरन दुर्व्यसनों की तरफ प्रेरित होती है । यही कारण है कि मनुष्यों को सदैव सन्मार्ग,—पुण्य कार्यों का ही उपदेश दिया जाता है । हानिकारक कार्यों, दुर्व्यसनों अथवा गन्दे आमोद-प्रमोद के लिए किसी को उपदेश देने की जरूरत नहीं होती, इनके सिखाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले 'गुरु लोग' तो सब जगह बिना कोशिश किये स्वयं ही मिल जाते हैं। इसलिए कोई त्यौहार किसी भी उद्देश्य की निद्धि के लिए क्यों न स्थापित किया गया हो, अगर उसमें कुछ हानिकारक बातों का समावेश हो गया हैं तो उनका त्याग अवश्य करना चाहिए। ये बातें व्यक्तिगत रूप से तो किसी प्रकार सहन करनी भी पड़ती हैं, पर इनको सामाजिक रूप दे देना महापाप समझना चाहिए, क्योंकि फिर तो उसका प्रभाव भले-बुरे सभी श्रेणियों के लोगों पर पड़ता है।

त्यौहार और धार्मिक उत्सव जाति के लिए नव-जीवन प्रदान करने वाले और स्फूर्ति प्रदायक होते हैं, इसलिए उनका प्रचार करना और उनको उत्साह से मनाना तो सभी समाज-हितैषियों का परम कर्तव्य है, पर साथ ही यह ध्यान रखना भी परमावश्यक है कि हम उनके वास्तविक उद्देश्य और स्वरूप को न भूलें। समय के प्रभाव से व्यक्ति और वस्तुओं की तरह संस्थायें और प्रथायें भी जीर्ण पड़ जाती हैं और उनमें अनेक प्रकार की कमजोरियाँ, दूषण प्रवेश कर जाते हैं। समझदार समाज-नेताओं का कर्तव्य है कि इस तरफ ध्यान देते रहें और जिस प्रकार हम प्रतिवर्ष अपने गृहों, वस्तुओं की सफाई, मरम्मत आदि कराते रहते हैं, उसी प्रकार सामाजिक प्रथाओं में भी समयानुकूल संशोधन और परिवर्तन करते रहें। प्रत्येक सामाजिक प्रथा, त्यौहार या उत्सव आदि को अटल-अचल समझ लेना मूर्खता का लक्षण है। हमें इस सम्बन्ध में सबसे पहले यह सूत्र याद कर लेना चाहिए कि "तमाम प्रथायें मनुष्यों के लिए बनाई गई हैं, न कि मनुष्य इन प्रथाओं के लिए" जो व्यक्ति ऐसा समझते है या कहते हैं कि ये तमाम त्यौहार और उनकी पद्धत्तियाँ सदा से ऐसी ही चली आई हैं और सदा ऐसी ही रहनी चाहिए, वे विचारशील कदापि नहीं हो सकते। यदि वे बुरा न मानें तो उनको 'कूप-मंडूक' भी कहा जा सकता है। त्यौहार और सामाजिक उत्सव सदैव कुछ न कुछ बदलते रहतेहैं और उनके मनाने की विधियाँ तो आज भी हर प्रदेश में कुछ न कुछ भिन्न हैं। हजार-दो हजार वर्ष की बात बात तो छोड़ दीजिए, अब से पाँच-सात सौ वर्ष पहले के साहित्य और ऐतिहासिक ग्रन्थों की भी भली प्रकार खोज करें तो मालूम पड़ेगा कि उस समय मनाये जाने वाले अनेकों त्यौहार आज समाप्त हो गये हैं और कितने ही नये प्रचलित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो गये हैं

त्यौहारों और सार्वजनिक उत्सवों की विवेचना के माध्यम से लक्ष्य यही रहता है कि अपने पूर्व पुरुषों के अनुकरणीय और उज्ज्वल सत्कार्यों की स्मृति को कायय रखते हुए, हम उनको इस प्रकार मनावें जिससे वे हमारे लिए ही नहीं, मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी सिद्ध हों। हमें सदैव उनसे कोई सत्-शिक्षा, सत्प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। हमें भूलना नहीं चाहिए कि यह सत्पर-म्परा किसी कारण विशेष से सुसंस्कारिता सम्वर्धन हेतु, जन-जन को धर्मचेतना को अनुप्राणित करने के लिए आरम्भ की गई थी। इस सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत बनाये रखना हम सबका युगधर्म है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्र०-२१८/ प्र० युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस-मथुरा। मूल्य ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org